

सती का चबूतरा

बनारस विश्वविद्यालय के महिला छात्रावास में लीला दीदी का अत्यंत सम्मान जनक स्थान था। अक्सर लड़कियाँ उसे घेरे रहतीं थीं, “इस बात का क्या अर्थ है, यह बात कैसी है?”

लीला दीदी एम.ए. के अंतिम वर्ष में थी। आज उसे बी.ए. की छात्राओं ने पकड़ कर बिठाया था ताकि वह उन्हें यह रहस्य बताए कि छात्रावास भवन के पीछे कम्पाऊंड की दीवार के पास जो बगीचा था उसमें लड़कियाँ पढ़ने के लिए क्यों जाती हैं? लीला दीदी हँसने लगी, “भला, विशेष रूप से नींबू के पेड़ों में से खुशबू आ रही है। शाँत एकांत....मन लगा कर पढ़ने के लिए ऐसे वातावरण की ही तो आवश्यकता है।”

“नहीं” विष्नी ने ज़िद की, “अवश्य और भी कुछ होगा। खास तौर पर नीलिमा को वहाँ सती के चबूतरे पर बैठी हुई देखकर मुझे संदेह होता है कि उस चबूतरे पर बैठकर पढ़ने के पीछे कोई रहस्य होगा।”

शब्द अभी विष्नी के मुख में ही थे कि तख्त पर लीला सहित बैठों सभी लड़कियाँ शाँत हो गईं। सभी की निगाहें नीलिमा पर थीं जो अपने कमरे से निकलकर तख्त के पास से गुज़रते हुए मधुर मस्कान और गुलाब की महक बिखेरते हुए चली गई, बायीं तरफ़ के कमरों की तरफ़ जहाँ उसी की कक्षा की एक सहपाठिनी रह रही थी।

तख्त पर बैठी लड़कियों की चीख उठी। किसी ने कहा, “शैतान के विषय में बात करो और शैतान हाज़िर।”

लीला दीदी मुख से च.....च.....कहते बोली, “भला कौन इस गुलाब के फूल की शैतान से तुलना करने का साहस करेगा?”

जीभ काटते हुए दुरू बोली, “सारी दीदी, नीलिमा जैसी सुंदर लड़की तो सचमुच मैंने जीवन में कभी नहीं देखी है.....।”

फिर तो नीलिमा के गुलाबी होंठों, बादामी आँखों के लिये लम्बे बालों और गोरे रंग की प्रशंसा की बातें। प्रत्येक ने उसके सौंदर्य के विषय में कोई न कोई खूबसूरत अभिव्यक्ति की।

इतने में नीलिमा सहपाठिनी के कमरे से निकल कर कम्पाऊंड की दो सीढ़ियाँ उतर कर छात्रावास के पीछे वाले बगीचे की तरफ़ चली गई। सभी ने फुसफुसाते हुए कहा, “सती का चबूतरा।” मगर नीलिमा ने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

तख्त पर बैठी हुई लड़कियों ने पुनः उसके सौंदर्य की चर्चा प्रारम्भ की ही थी कि मैगी ने कहा, “बस, बस, हद हो गई। मैंने हाँगकाँग में परियाँ देखीं हैं। इसका सौंदर्य तो कुछ भी नहीं.....।”

लीला दीदी घुटनों पर बाहें रखे हुए उन पर तुड़ी रखकर बैठी थी। उसका चेहरा हँस रहा था। मैगी ने कहा, “हाँगकाँग में हमारे कान्वेंट में ही इससे अधिक सुंदर लड़कियाँ थीं।”

लीला ने पूछा, “मैगी तू सच सच बता, तुझे बनारस छात्रावास के इस पूर्वी माहौल में मज़ा आता है?”

“मज़ा? छी! मैं तो इस कदर बोर होती हूँ कि आज ही वापिस लौट जाऊँ पर पपा! ओ माइ गाड! ऐसे पपा तो किसी को भी नहीं मिलें। बस आदेश पूर्वक बोले, ‘जाकर बनारस वि.वि. में पढ़कर, हिंदुस्तानी बनकर आओ। यहाँ तुझे पश्चिम की हवा लग गई है...।’

“हाँगकाँग तो भारत के पूर्व में है। इस लिहाज़ से पश्चिम की हवा पहले यहाँ लगी होगी। वास्तव में ऐसे डैडी तो नहीं मिलने चाहियें। मेरे डैडी कहते हैं, ‘इंडिया का कल्चर हाँगकाँग से अच्छा है...।’ मैगी टूटी फूटी हिंदी में बोली तो सभी को मज़ा आ रहा था। हँसते-हँसते सभी बोलीं, “चलो बाग़ में चलकर सती के चबूतरे पर महफ़िल मचाएँ। देखें नीलिमा हमें चबूतरे पर पाँव रखने देती है या नहीं?”

सात शीतलाओं का यह दल जब बगीचे में पहुँचा, तब दूर से देखकर मैगी ने कहा, “देखो देखो, नीलिमा आसमान में कुछ ढूँढ़ रही है...।”

इस दल को देखकर नीलिमा उठ खड़ी हुई और एकाएक पीछे घूमकर वापिस छात्रावास चली गई। सभी ने नीलिमा को आवाज़ें दीं पर वह गायब हो गई।

लीला दीदी ठण्डी साँस लेकर बोली, “बेचारी!”

मैगी ने कुछ अंग्रेजी कुछ हिंदी में कहा, “ये तो हद है, तुम सब यहाँ आकर बैठी हो नीलिमा से मिलने के लिए और वह नौ दो ग्यारह हो गई। फिर भी दीदी कहती है, “बेचारी!” कहना चाहिये, बैड मैनर्स!”

लीला दीदी के लिये छात्रावास के विद्यार्थियों के मन में इतनी इज़्जत थी कि मैगी का इस तरह बोलना सबको बेहद बुरा लगा।

लीला दीदी सब के साथ बोली, “बेचारी क्यों कहा, इसका कारण तुम्हें पता है?”

“उसने हमें कुछ नहीं कहा, मैदान छोड़कर चली गई इसलिए ‘बेचारी’ होगी और क्या?”

“नहीं, ऐसा नहीं है। तुम्हें पता है कि नीलिमा विधवा है?”

मैगी ने मुँह पर हाथ रख कर कहा, "अरे! ना! नो! न, न! "

"तुम जानती हो कि यहाँ विधवा की क्या स्थिति है?"

मैगी ने परेशान होकर कहा, "मगर यह इतनी छोटी! मैंने तो सोचा इसकी अभी तक शादी भी नहीं हुई होगी।"

सिर हिलाकर हामी भरते हुए लीला दीदी ने कहा, "उसकी शादी को बाल विवाह कहते हैं। बहुत बड़े घराने से है नीलिमा-उसके पिता को किसी कारणवश पैसों की शीघ्र और सख्त जरूरत पड़ी। उसका विवाह एक बड़े जमींदार के साथ करवा दिया।"

एक अजीब खामोशी पसर गई सती के चबूतरे के ऊपर। चतुर्दिक पेड़ों पर कुछ चिड़ियों की चूँ चूँ सुनाई देने लगी। नींबुओं के पेड़ों से हवा के साथ महक ने उड़कर इन लड़कियों के दिल का मुँह खट्टा कर दिया।

मैगी विचारमग्न थी। कोकिला ने उसे झकझोर कर कहा, "चलो, चलकर गंगा किनारे बैठें। सूर्यास्त का दृश्य देखें.....।"

मैगी ने होंठों पर अँगुली रखकर कहा, "पर लीला दीदी! आपके इण्डिया में ऐसा क्यों है कि पुरुष बार बार विवाह करते हैं। मुसलमान तो पत्नी के जीवित रहते दूसरा विवाह रचाते हैं, किंतु औरतों के लिए विधवा विवाह पाप है?"

सभी लड़कियों ने अपने अपने अन्दाज में इस विषय पर बात की। जोश में आकर मीरा ने कहा, "क्या इस नीलिमा के जीवन में कोई अरमान ही नहीं होंगे?"

लीला दीदी ने एक उदास हँसी फेंककर कहा, "उससे अधिक अरमान इन लड़कियों के छात्रावासों में जगने शुरू हुए हैं...।"

"मतलब?" मैगी ने पूछा

"लड़कों ने इतने पत्र लिखने शुरू किये हैं कि छात्रावास की माताजी तंग आई हैं। एक पत्र तो नीलिमा को नोटिस बोर्ड से प्राप्त हुआ था। बेचारी ने मुझे आकर दिखाया था।"

लड़कियों ने लीला दीदी को झकझोर कर पूछा, "बताओ, क्या लिखा था?"
"लिखा था, तुम जब विश्वविद्यालय के रास्ते से गुज़रती हो तब ऐसा लगता है गोया रास्ते के कोलतार से चमकीले शोले निकलने लगे हैं। रास्ते का रंग ही बदलकर सुनहरा पीला सा हो गया है। लगता है, सारे विश्वविद्यालय के समस्त रास्ते तुम्हारे ही कदमों से फूटकर निकलते हैं और तुम्हारे पाँवों को छूकर दूर-दूर तक चले जा रहे हैं। कितने गोरे और मुलायम हैं तुम्हारे पाँव? प्रत्येक कदम पर तुम्हारी चाल एक आश्चर्यजनक इन्द्रजाल पैदा करती हमारे छात्रावास की ओर फेंकती जाती है। हम नवयुवक उस समुद्र, उस सतरंगे जाल में फंसकर सुन्न हो जाते हैं।"

“रजनीगंधा की डालियों जैसी तुम्हारी बाहें जब हवा से हल्के कोमल बदन के दोनों तरफ लहराकर चलती हैं तब लगता है तुम्हारी अँगुलियों से रजनीगंधा की बंद कलियाँ प्रस्फुटित होने को आतुर हैं। ये कलियाँ खिलने से पूर्व ही इतनी महक बिखेरती जाती हैं! जब किसी गले का स्पर्श कर खिल उठेंगी तब कैसी होगी वह महक? सम्पूर्ण पृथ्वी पर जल, थल, आकाश में सुगंध का सागर लहरा उठेगा उस समय, वह भाग्यशाली व्यक्ति जब सारे संसार से अधिक मधुरिम चुम्बन जड़ देगा इन कोमल गुलाबी अधरों पर...। अधमुंदी आँखें जब उस प्रिय की ओर देखेंगी तब स्वर्ण पृष्ठ दमकती छेड़खानी से जकड़ लेगा उसके जी को...।”

लीला दीदी के मुख से पत्र का इतना विवरण सुन अन्य सभी तो मंत्र मुग्ध हो ही गईं परन्तु मैगी बड़ी उलझन में फँस गई। छटपटाते हुए बोली, “पर इस लड़की का पुनर्विवाह करवाने में कौनसा गुनाह है?” सभी लड़कियों ने इस प्रश्न के उत्तर हेतु लीला दीदी के मुख की ओर देखा।

लीला दीदी पहले तो कुछ पल मैगी की तरफ देखती रही, फिर धीरे से बोली, “नीलिमा बहुत बड़े घराने की लड़की है, जहाँ दूसरी शादी को हल्कापन समझा जाता है। वह तो इस उम्र में चार संतानों की माता है।”

चीख निकल गई कॉलेजी लड़कियों के मुख से। लीला दीदी को हँसी आ गई। सभी भिन्न भिन्न टिप्पणियाँ दे रहीं थीं कि बच्चे सौतेले होंगे या उसके भाई बहिन होंगे...। लीला ने कहा, “ठीक ही समझा है। नीलिमा के पिता को किसी व्यापार में हानि हुई। जिस भले आदमी से ऋण लेकर घर को नीलाम होने से बचा सका था उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी। उसने नीलिमा का हाथ माँगा। शादी हुए बारह महीने भी नहीं बीते थे कि वह बड़ा खानदानी ज़मींदार परलोक सिधार गया। नीलिमा के गांव वाली औरतों व सखियों ने कहा, “इतना सौंदर्य लेकर लड़की पति के सिवाय बर्बाद हो जाएगी। उसकी आयु जितने तो दो बेटे घर में ही हैं इसे सती बना देना चाहिए।”

अब तो लड़कियों के मुँह से दर्द भरी चीख निकल गई। मैगी ने अंग्रेज़ी शब्द क्रोध से जो बहुत सारी गालियाँ रट रखीं थीं, वे सभी नीलिमा के माता-पिता को देती गई।

लीला दीदी ने मैगी के घुटने पर हाथ रख कर, उसे शांत रहने के लिए कहा और बात को समाप्त करते हुए बोली, “उसके पिता ने कुछ नये विचारों की पट्टी पढ़ना शुरू किया है। इसलिए बेटी को अपने पास लेकर आया है और एकदम यहाँ कॉलेज में प्रवेश दिलाया है।”

मैगी ने छाती पर हाथ रखकर कहा, “मेरे भगवान! क्या तो लड़की की

खूबसूरती है! गाल टमाटर की तरह और होंठ तो बेशक चेरी लिप्स हैं, चमड़ी रसी गोरी प्लेन है गोया मखन।”

“फूड डिपार्टमेंट में नौकरी की है शायद।” एक लड़की ने मैगी पर टांटिंग की।

मैगी आग बबूला हो गई, “यह है कल्चर! यह है इंडियन कल्चर! यही सीखकर आने के लिए डैडी ने मुझे इस बनारस विश्वविद्यालय में भेजा है।”

“धैर्य, धैर्य, मेरी प्यारी मैगी! भला, तुम्हारे कल्चर में यह तो होगा कि जो टांटिंग करे उसे टांटिंग में ही उत्तर दिया जाए.....।”

मैगी मुंह फुलाकर बैठी रही।

एक लड़की ने पश्च किया, “दीदी! नीलिमा पढ़ने के बाद फिर क्या करेगी?”

“क्यों, पढ़ाई अपने आप में एक शक्ति नहीं है?” दूसरी ने पूछा, “ऐसा तो नहीं होगा कि यह फिर जाकर घर गृहस्थी में फँस जाएगी। सारा दिन आटा उसनेगी। सारा दिन बच्चों को और बच्चों के बच्चों को लोरियाँ देने में बिताएगी”

“धत्।” मैगी के मुँह से निकल गया। “अरे! ऐसी लड़की कोई कारखाना खोल दे तब भी लाखों कमाएगी।”

लीला दीदी, “सॉरी” कहकर मैगी पर हमला कर बैठी, “मैगी पैसे कमाना ही जीवन को सफल बनाने का एक मात्र उद्देश्य नहीं है। सम्भव है उसका दुबारा विवाह किया जाए— या एक एम.ए. पास औरत जिस सुगढ़ तरीके से घर गृहस्थी चला सकेगी वह क्या कम महत्वपूर्ण लगता है तुम लोगों को?”

अब गर्दन खुजलाते प्रत्येक ने अपनी राय दी। कोई बोली इसे अधिकाधिक पढ़कर प्रिंसीपल बनना चाहिये। दूसरी ने कहा, ऐसी सुंदर अगर डाक्टर बन जाए तो हमारे देश की जितनी गर्भवती औरतें इस डाक्टर ने पास आएँगी वे इसके जैसे सुंदर बच्चों को जन्म देंगी। मैगी चौड़ी आँखें फैलाकर सती के चबूतरे पर हाथ मार कर बोली, “मैं कहती हूँ कि अगर मैं विवाहोपरांत विधवा बन गई तो अवश्य दुबारा शादी करूँगी। औरत जात पुरुष बिना अच्छी नहीं लगेगी। भला पुरुष बिना औरत के चल सकते हैं.....जैसे मेरे डैडी हैं। हमारी मम्मी ने तो मरते समय वचन लिया था, तुम अवश्य दुबारा विवाह करोगे। तब तक प्राण ही नहीं निकल रहे थे बेचारी, बीमारी से इतनी परेशान थी,....च...च...च...।”

मैगी की तरफ देखते देखते लीला दीदी बोली, “मैगी मीरचंदानी तुम्हारी एक बात माननी पड़ेगी, तुम कठिन से कठिन बात बड़ी ही आसानी से कह जाती हो...। उदाहरणार्थ यह माँ की मृत्यु की बात।”

“क्या है उसमें, हकीकत ही तो है।”

एक सखी उसकी ओर टकटकी बाँधे देख रही थी! उसने कहा, “फिर मैगी

क्यों, तुम्हारा नाम मेधी है। उससे क्यों नहीं पुकारें तुझे”

“ओ नो नो नो ...।” बच्चों की तरह मैगी ने हठ किया। अचानक बोली, “बाकी एक बात इस नीलिमा के बारे में इतनी सारी बातें कैसे पता चलीं आप लोगों को?”

“अरे वाह! ” लीला दीदी साड़ी झटक कर उठ खड़ी हुई, “रामायण समाप्त हो गया, अब पूछती हो राम कौन था?”

मैगी ने लीला दीदी का हाथ पकड़ लिया...। आखिर लीला दीदी को कहना ही पड़ा, “मैं भी नीलिमा के ही गाँव की तो हूँ”

सभी चौंक उठीं।

अनुवाद : डॉ. कमला गोकलानी

